LOOK N LEARN

Children's Jain

E-book

Serial No. 32

The knowledge of 32 Aagams in your phone

To subscribe please Watts app - Jai Jinendra on +91 8104461579

Inspired by Rashtrasant Param Gurudev Shree Namramuni Maharaj Saheb

You will never understand
the damage you did to someone...
until the samething is done to you
That's why I'm here...

KARMA !

Any action by mind, body and speech that taints our soul is considered as a sin.

For example: harming others, stealing, being untruthful, false beliefs, disrespect for people are all considered as sinful actions. When we commit a sin, we bind bad karmas.

मन, वचन या काया से की गई कोई भी क्रिया जिससे आत्मा पर दाग लगते हैं उसे पाप कहते हैं।

जैसे, किसी वस्तु या व्यक्ति को हानि पहुंचाना, झूठ बोलना, चोरी करना, झूठी मान्यताएं रखना, वस्तु या व्यक्ति का अविनय करना- इन क्रियाओं को पाप कहते हैं। पाप करने से हम बुरे कर्मों का बंध करते हैं।

Virtues are the qualities of a person that leads them towards the purification of their soul. It serves as a foundation to become a morally good person. Some of them are being truthful, brave, helpful, being satisfied and friendly.

We should strive to purify our soul and attain a state of liberation like Siddha Parmatma.

व्यक्ति की ऐसी विशेषताएं जो उसकी आत्मा को शुद्धता की ओर ले जाती है उसे गुण कहते हैं। यह विशेषताएं उस व्यक्ति की नैतिकता की बुनियाद होती है। जैसे, हमेशा सच बोलना, साहसी होना, मददगार होना, संयमी होना और सबसे मित्रता रखना।

हमे आत्मा को शुद्ध करके जन्म-मरण से मुक्ति पाकर सिद्ध परमात्मा बनने का प्रयास करना चाहिए।

What is the process of binding a sin?

We bind sins by means of mind, body and speech. It attracts bad karmas. Particles of karmas gets attached to our soul and later comes into effect as a reaction to our action. When we bind sin, the action is wrong and wrong action leads to wrong reaction that causes us pain.

पाप कार्य का बंध कैसे होता है ?

हम मन वचन या काया से पाप कार्य करते हैं। जब हम पाप कार्य करते है तब आत्मा बुरे कर्म के परमाणु को आकर्षित करती है और वह परमाणु आत्मा पर चिपक जाते है। यह बुरे कार्यो का फल प्रतिक्रिया के रुप में सामने आता है। जब हम पाप करते है, तब हमारी क्रिया गलत होती है और उससे होनेवाली प्रतिक्रिया भी गलत होने के कारण हमें दुख का अनुभव होता है।